IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

''भोपाल जिल` के कृषि विकास मे ं मध्यप्रदेश राज्य सहकारी विपणन संघ मर्यादित की भूमिका का विश्लेषणात्मक अध्ययन''

शोधार्थी :– प्रियंका शर्मा

डॉ. पुष्पलता चौकसे (प्राध्यापक एवं विभागाध्यापक (वाणिज्य विभाग) शासकीय हमीदिया कला एव ं वाणिज्य स्नाकोत्तर महाविद्यालय भोपाल (म.प्र.)

1. परिचय/प्रस्तावना
2. शोध का औचित्य
3. शोध कार्य का क्षत्रे
4. शोध अवधि
5. शोध प्रविधियाँ
6. शोध अध्ययन मे ं आने वाली समस्याएँ
7. शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ
8. शोध साहित्य समीक्षा
9. ग्रन्थावली
10. सारांश

प्रस्तावना :– उन्नति वर्तमान युग में आर्थिक एवं सामाजिक क` लिये आवश्यक हो गया है कि किसी भी क्षेत्र को किसी ना किसी के माध्यम से विकासशीलता की आरे अग्रसर किया जा सकता है। अर्थात् एक क्षेत्र में विकास करने क` लिए किसी अन्य क्षेत्र का सहारा लने ा होता हैं, इसी तथ्य के आधार पर कहा जा सकता है कि कृषि क` विकास में मध्यप्रदेश राज्य सहकारी विपणन संघ मयादित क` महत्व को अवश्य ध्यान में रखना चाहिये, क्योंकि कृषक द्वारा कवे ल कृषि के उत्पादन के आधार पर किसी नतीज` पर नहीं पहुँचा जा सकता अर्थात्

जब तक की उसे उपभोक्ता तक नहीं पहुँचाया जाता है। कृषि उत्पादन के माध्यम से आर्थिक एवं सामाजिक विकास को मापना कठिन कार्य हाते ा हैं। मध्यप्रदेश राज्य सहाकरी विपणन संघ मयादित को सामान्यताः ''मार्कफडे '' के नाम से संबोधित किया जाता है। जो कि अपने आप में लोकप्रिय है। मध्यप्रदेश राज्य सहकारी विपणन संघ मयादित को प्रदेश की सभी सहकारी विपणन समितियो ं में सर्वश्रणे ी माना गया है। जो कि वर्ष 1956 में गठित की गई है। माकर्फ डे मध्यप्रदेश सहकारी समितियाँ अधिनियम 1960 के अन्तर्गत पंजीकतृ सहकारी संस्था के रूप मे ं कार्यरत हैं प्रदश े ा में कार्यरत सभी सहकारी संस्थाआं ` में से सर्वश्रेष्ठ संस्था होन ` क ` कारण माकर्फ डे अपनी सामाजिक जिम्मदे ारिया ` का भी निर्वहन कर रहा है। जिसके फलस्वरूप संस्था की प्राथमिकता, लाभप्रदता क ` अलावा कृषि क्षेत्र में अपनी साख एवं बेहतर सेवाऐं बनाए रखने को हैं। सहकारी विपणन संघ मयादित द्वारा अपनी भूमिका को सफलतापूर्वक निभाते रखते हुए प्रदश े ा के सभी किसानों की आर्थिक स्थिति में सुधार आन ` की संभावनाओं को देखा जा सकता है। सहकारी विपणन संघ द्वारा कृषकां को उनके उद्देश्यो ं को पूर्ण करने में प्रगति प्रदान की जाती है। साथ ही इसे कृषि सबं ंधी उत्पादो ं के वितरण की एक महत्वपूण ं एजेन्सी के रूप म ` पहुचाना जाता है। माकर्फ डे क ` गठन का मख्ु य उद्देश्य सहकारी विपणन को बढ़ावा देना एवं उच्च स्तर की कृषि उत्पादों का वितरण करना एवं कृषि उपज का किसानो ं स ` उपभोक्ताओ ं तक पहुँचाना होता हैं।

''मार्कफडे '' द्वारा कृषि कार्य से संबंधित गुणवत्तायुक्त उत्पादन जैसे उर्वरक, बीज, कीटनाशक, कृषि उपकरण विक्रय एवं वितरण करने क ` साथ–साथ न्यूनतम समर्थन मल्ू य पर कृषि उपजां ` क ` उपार्जन क ` कार्य भी सफलतापूर्वक सम्पन्न किये जा रहे हैं। जिनक ` फलस्वरूप सुदूर अंचलों में स्थापित प्राथमिक कृषि साख सहकारी समितियों एवं विपणन सहकारी समितियो ं क ` माध्यम से कृषकों को उचित समर्थन मल्ू यो ं पर आसानी से गुणवत्तायुक्त कृषि उत्पादन आदान उपलब्ध हो सक। एक शोधार्थी क ` रूप में मरे ` द्वारा यह कहा जा सकता है कि प्रदेश क ` सहकारी क्षेत्र अन्तर्गत कृषि उत्पादन क ` व्यवसाय में माकर्फ डे शीर्ष स्थान पर विधवान है, जो कि कृषको ं क ` हित में विगत 50 वर्षो ं से सफलतापूर्वक कार्यरत हैं। माकर्फ डे द्वारा सर्वपश्र ाम अपना व्यवसाय 19 सितम्बर 1956 में कलु 4.65 लाख की पूंजी से प्रारम्भ किया गया था जो कि वर्तमान में लगभग 21.12 करोड़ से अधिक हो चुका है साथ ही काया ं क ` संचालन हेत ु माकर्फ डे क ` पास भारी मात्रा में याग े य एवं कर्त्तव्यनिष्ठ कर्मचारी अपनी सेवाआं ` को देने क ` लिए उपलब्ध है। शोधार्थी द्वारा यह भी दर्शाया जा रहा

है कि ''माकर्फ डे '' अधिक मात्रा में रासायनिक उर्वरको ं का वितरण एवं कृषि उत्पादों का उपाजर्न करता हैं, जिसके फलस्वरूप प्रदश े ा की कृषि उत्पादन क्षमता मे ं बढ़ोतरी क` चलते हुए किसानो ं क` जीवन स्तर मे ं परिवर्तन देखने को मिल रहा है आरै इसमं ` ''माकर्फ डे '' की अहम भूमिका मख्ु य रूप स` परिभाषित होती हैं।

शोध कार्य का औचित्य :– चयनित शोध विषय द्वारा यह बढ़ाने का प्रयास किय जा रहा है कि कृषको ं द्वारा उत्पादित कृषि उत्पादो ं का अधिक स अधिक विक्रय मल्ू य कषृकों को प्राप्त हो सके जिसस` कृषकों क` आर्थिक विकास में वृद्धि हो सक` चूंकि कृषि क` क्षेत्र में अनेक बिचोलिये व्यक्ति हैं, जो कृषकों को अधिक विक्रय मल्ू य प्राप्त करने का लालच देते रहते हैं परन्तु वे कृषकां ` को लाभान्वित नहीं करा पाते हैं, अतः विपणन संघ ऐसी संस्था स्थापित की गई है जो कि कृषि के क्षेत्र में कषृकां ` क` हित में अपना बहुमूल्य यागे दान देती है और कृषको ं क` आर्थिक विकास में ही वृद्धि नहीं होती है वरन् विपणन संघ को अधिक लाभ होता है जो कि इसकी सेवा क` बदल `में इसे प्राप्त होती है। और साथ ही इसकी आार्थिक स्थिति में भी सुधार होता है। विपणन संघ एवं कषृको ं क` आपसी संबंधों क` कारण एक दूसरे की आर्थिक स्थिति में सुधार लाने हेत ु प्रयास करना शोध कार्य का मख्ु य कारण हैं।

शोध कार्य का क्षेत्र :– सम्पूर्ण भारत वर्ष को कृषि प्रधान देश कहा जाता है जिसमें कृषि एवं विपणन संघ क` माध्यम से आर्थिक स्थिति में सुधार का मल्ू याकं न किया जाता है। परन्तु मरे ` द्वारा शोध विषय का कार्य करने क` लिए मध्यप्रदेश राज्य को चयनित करते हुए बताया गया है कि प्रदश े ा की आर्थिक स्थिति क` सुधार मे ं कृषि एवं विपणन संघ की भूमिका रही हैं। मध्यप्रदेश मे ं स्थित अधिक से अधिक ग्रामीण क्षत्रे ो ं मं ` कृषि उत्पादो ं का कृषको ं तक उचित मल्ू यो पर वितरित करने हेतु विपणन संघ अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान कर रहा है। जिसस` इन क्षेत्रों में कृषि के विकास में वृद्धि होती आ रही है।

शोध की अवधि :–

शोध विषय विगत 10 वर्षो ं (2009–10 से 2018–19) तक अवधि क` आधार पर पूर्ण किया जा रहा है जिसके आधार पर विपणन संघ एवं कृषि उत्पादों क` माध्यम से आर्थिक विकास के मापने की कार्यवाही की जा रही हैं।

शोध प्रविधियाँ :–

शोध कार्य को करने की कार्य विधि को सामान्यताः शोध विधि मे ं शामिल किया जाता है। शोध विधि दर्शाती है कि शोधार्थी द्वारा किया जाने वाला शोध कार्य वास्तविक स्थिति को प्रकट कर रहा है या नहीं, इसके लिए मुख्यताः प्राथमिक एवं द्वितीयक शोध विधियो ं का प्रयोग किया जा सकता है। प्राथमिक शोध विधि मे ं वे जानकारिया ँ उपलब्ध होती है जो कि प्रथम बार प्रयोग मे ं लाई गई है एवं द्वितीयक शोध विधि मे ं उन जानकारियों को दर्शाया जाता है। जिन्हे ं पहले कहीं प्रयोग मे ं लाया जा चुका है। द्वितीयक शोध विधि के अन्तर्गत जानकारियो ं को मुख्यता शोध विषय से संबंधित वार्षिक प्रतिवेदनां` एवं अन्य ग्रन्थो ं से प्राप्त किया जाता है एवं प्राथमिक प्रविधि मे ं पूछताछ करते हुए एवं प्रश्नावली के माध्यम से जानकारी प्राप्त करते हुए कार्यपूर्ण किया जाता हैं। मेरे द्वारा अपने शोध कार्य को पूर्ण करने के लिये द्वितीयक शोध प्रविधि को प्रयोग मे ं लाया जा रहा है।

शोध कार्य में आने वाली समस्याएँ :–

शोध कार्य को पूर्ण करने में आन` वाली समस्याओ ं म ं मुख्य समस्या कार्य से संबंधित जानकारियों को एकत्रित करना होता हैं, जो कि मरे` द्वारा भी देखी गई हैं, चूकि मरे । शोध कार्य द्वितीयक आकं ड़ो ं पर आधारित है जिन्हे ं एकत्रित करने क` लिए मख्ु य रूप से शोध विभाग क` वार्षिक प्रतिवेदनों से प्राप्त की गई है उनके आधार पर यह निर्णय लने । मुश्किल होता है कि प्रतिवेदनों में दर्शाई गई जानकारियाँ वास्तवित है या नहीं, प्रस्तुत आंकड़े सही है या गलत।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ :–

1) म.प्र. सहकारी विपणन संघ ''माकर्फ`ड'' द्वारा उपाजिर्त उपज की खरीद और विक्रय में कोइ ॅ सार्थक अन्तर नहीं है।

2) म.प्र. राज्य सहकारी विपणन संघ ''माकर्फ डे '' के लाभ और कलु विक्रय में कोई साथर्क अन्तर नहीं हैं।

शोध साहित्य की समीक्षा :–

शोध कार्य को पूर्ण करने क` लिये आवश्यक होता है कि शोधार्थी द्वारा जो कार्य किया जा रहा है उससे संबंधित पूर्व में किये गए कार्यो ं की समीक्षा कर ली जाए, जिसका परिणाम संभवता सकारात्मक रूप में ही प्राप्त होगा साथ ही शोध कार्य को पूर्ण करने में कोइ ॅ त्रुटि का सामना ना करना पड़` और यदि आंकड़ां` क` आधार पर यदि कोइ ॅ गलत परिणाम सामने आ रहे हैं ता` आक ड़ो ं को आवश्यकतानुसार सुधारते हुए शोध कार्य को पूर्ण किया जाए। शोध कार्य स` संबंधित समीक्षा को दर्शाने के लिये निम्न साहित्य की सहायता ली जा रही हैं।

शकील उल रहमान (2012), म ं वे सभी गतिविधियाँ शामिल है जो उत्पादकां, किसानों से लके र उपभोक्ताओ ं तक कृषि उपज क` आन्दोलन में शामिल है। इन गतिविधियों मं कृषि उपज की खरीद, भण्डारण परिवहन, वितरण आरै प्रसंस्करण, कृषि उत्पादों का उत्पादन और व्यापार करने क` लिए विपणन व्यवस्था संरचना प्रोत्साहन शामिल है। और जिसस` कृषि क्षेत्र क` भीतर आर्थिक गतिविधि का मार्गदर्शन होता हैं।

शायकर विलास बी. (2017), क` शोध पत्र मे ं भारत में कृषि सहकारी विपणन संघ लिमिटेड (नफेर्ड ) का एक अध्ययन कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीड़ हैं। लेकिन दिन प्रतिदिन जी. ड़ी.पी. में हिस्सेदारी घट रही है। भारतीय कृषि क` नाम पर कई चुनौतियां का सामना करना पड़ रहा है। जिनमें से कछु मं क्रेडिट ट्रांसफार्ट, इनपुट, मार्केटिंग, वेयर हाउसिंग आदि शामिल हैं। कृषि विपणन किसानों क` लिए महत्वपूर्ण है। नैफेड ने किसानों को कृषि उपज का विपणन करने क` लिए उचित मदद की है। प्रस्तुत पत्र में नैफडे क` अध्ययन, शेयर पूंजी, आरक्षित और अन्य निधियों की वृद्धि सकल लाभ, शुद्ध लाभ और हानि और 2006–07 से 2016–16 तक व्यापार कारोबार पर आधारित है। वर्तमान शोध पत्र में कृषि विपणन के प्रकारो ं और मुद्दों पर ध्यान केन्द्रित किया गया है। और समस्याओ ं से निपटने के उपाय

किए गए है। यह शोध का भारत में कृषि विपणन की समस्या को हल करने क` लिए कछु उपाय और सुझावों क` सम्पन्न हुआ है। यह सही है कि अगर किसानो ं को बचाया जाता है तो देश बचता हैं।

ग्रन्थावली :–

शोध कार्य को सफलतापूर्वक करने के लिए सभी शोधार्थियां को अनेक पुस्तको, वार्षिक प्रतिवेदनो, प्रकाशित पत्रिकाओं आदि की आवश्यकता होती है जिसके माध्यम से शोध कार्य से संबंधित जानकारियो ं को आवश्यकतानुसार आसानी से प्राप्त किया जा सकता है इसी तथ्य के आधार पर मेरे द्वारा भी निम्न गन्थावलियो ं की सहायता ली जा रही है –

1. विपणन संघ मयादित विभाग द्वारा प्रकाशित वार्षिक प्रतिवेदन।
2. कृषि विभाग द्वारा प्रकाशित वार्षिक प्रतिवेदन।
3. विभिन्न प्रकार के समाचार पत्र।
4. कम्प्यूटर वेबसाईट, नेट आदि।

सारांश :– उपरोक्त शोध पत्र के माध्यम से कहा जा सकता है कि भारत वर्ष एवं मध्यप्रदेश मं` कार्यरत कृषको ं द्वारा जो कृषि उत्पादन किये जाते है उनको उपभोक्ता तक पहुचाने एवं कृषिको ं को उनका उचित मूल्य करवाने मे ं विपणन संघ मर्यादित द्वारा अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है जिसके फलस्वरूप मध्यप्रदेश राज्य की एवं कृषको ं की व्यक्तिगत आर्थिक स्थिति मे ं सुधार निरन्तर हो रहा हैं।